6
जयशंकर प्रसाद
(जन्म : 1889 ई. / मृत्यु : 1937 ई.)

जीवन परिचय –

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी नगरी में सन् 1889 में हुआ था। इनके पिता बाबू देवीप्रसाद विद्यानुरागी थे, जिन्हें लोग सुँघनी साहु कहकर बुलाते थे। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा का प्रबंध पहले घर पर ही हुआ। बाद में इन्हें क्वीन्स कॉलेज में अध्ययन हेतु भेजा गया। अल्प आयु में ही अपनी मेधा से इन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। बचपन से ही इनकी रुचि साहित्य की ओर थी। 'इन्दु' नामक मासिक पत्रिका का इन्होंने सम्पादन किया। साहित्य जगत् में इन्हें वहीं से पहचान मिली। काव्य रचना के साथ–साथ नाटक, उपन्यास एवं कहानी विधा में भी इन्होंने अपना कौशल दिखाया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

काव्य	–	आँसू, लहर, झरना, कामायनी, प्रेमपथिक, चित्राधार
नाटक	–	ध्रुवस्वामिनी, विशाखा, राज्यश्री, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चंद्रगुप्त, एक घूँट
उपन्यास	–	कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
कहानी	–	आकाशदीप, प्रतिध्वनि, पुरस्कार, गुण्डा, आँधी, छाया, इन्द्रजाल
निबन्ध	–	काव्यकला तथा अन्य निबन्ध

प्रसाद जी की प्रतिभा बहुमुखी है, किन्तु साहित्य के क्षेत्र में कवि एवं नाटककार के रूप में इनकी ख्याति विशेष है। छायावादी कवियों में ये अग्रगण्य हैं। 'कामायनी' इनका अन्यतम काव्य ग्रन्थ है, जिसकी तुलना संसार के श्रेष्ठ काव्यों से की जा सकती है। 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का जीता जागता रूप प्रसाद के काव्य में मिलता है। मानव सौन्दर्य के साथ–साथ इन्होंने प्रकृति सौन्दर्य का सजीव एवं मौलिक वर्णन किया है। इन्होंने ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली दोनों का प्रयोग किया है। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है। 15 नवम्बर सन् 1937 ई. को हिन्दी साहित्य का यह अमर कवि सदा के लिए संसार से विदा हो गया।

पाठ परिचय –

जयशंकर प्रसाद की 'प्रभो' कविता उनके स्फुट कविताओं के संग्रह 'कानन कुसुम' से ली गई है। ईश्वर की स्तुति करते हुए कवि ने उसकी सर्वव्यापकता, सौन्दर्य और शक्तिमत्ता का गुणगान किया है। कवि को प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर का अनन्त प्रसार दृष्टिगत होता है। चन्द्र किरणें ईश्वरीय प्रकाश को व्यक्त करती हैं। सागर की उत्ताल तरंगें उसकी

स्तुति करती हैं। चन्द्रिका उसकी मुस्कान को तथा नदियों का कल–कल निनाद उसके आह्लाद को व्यक्त करता है। वस्तुतः प्रकृति के सौन्दर्य और प्रेम से युक्त भव्य रूप को प्रकाशित करने वाला ईश्वर ही है। ईश्वर की कृपा होने पर ही मनुष्य के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं। खड़ी बोली हिन्दी में रचित यह कविता प्रसाद जी की भावाभिव्यक्ति का सुंदर उदाहरण है। तत्सममयी और गंभीर भाषा ने कविता को अद्भुत अभिव्यंजना सौष्ठव से युक्त कर दिया है। लयात्मकता, सरसता और मौलिकता की दृष्टि से भी यह कविता उत्तम कोटि की है।

प्रभो!

विमल इन्दु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही हैं।
अनादि तेरी अनन्त माया,
जगत को लीला दिखा रही हैं।

प्रसार तेरी दया का कितना,
ये देखना है तो देखे सागर।
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
तरंग मालाएँ गा रही हैं।

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना,
वो देख सकता है चंद्रिका को।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ,
निनाद करती ही जा रही हैं।

विशाल मंदिर की यामिनी में,
जिसे देखना हो दीपमाला।
तो तारकागण की ज्योति उसका,
पता अनूठा बता रही हैं।

प्रभो! प्रेममय प्रकाश तुम हो,
प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली।
असीम उपवन के तुम हो माली
धरा बराबर बता रही है।

जो तेरी होवे दया दयानिधि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।
सभी ये कहते पुकार करके,
यही तो आशा दिला रही है।

कठिन शब्दार्थ

विमल	–	स्वच्छ	**इन्दु**	–	चन्द्रमा
अनादि	–	जिसके प्रारम्भ का पता न चले	**स्मित**	–	मुस्कान
निनाद	–	ध्वनि	**यामिनी**	–	रात्रि
पद्मिनी	–	कमलिनी	**अंशुमाली**	–	सूर्य
मनोरथ	–	इच्छा			

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. जयशंकर प्रसाद का जन्म हुआ –
   (क) 1880 ई. (ख) 1889 ई. (ग) 1888 ई. (घ) 1890 ई.
2. जयशंकर प्रसाद द्वारा सम्पादित पत्रिका का नाम है –
   (क) प्रभा (ख) माधुरी (ग) सरस्वती (घ) इन्दु

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. जयशंकर प्रसाद के किन्हीं तीन काव्य संग्रहों के नाम बताइए?
4. ईश्वर की प्रशंसा का राग कौन गा रहा है?
5. मनुष्य के मनोरथ कब पूर्ण होते हैं?
6. अंशुमाली का क्या अर्थ है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

7. 'प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली' से कवि का क्या तात्पर्य है?
8. कवि ने ईश्वर को अनादि क्यों कहा है?
9. यामिनी में अनूठा पता कौन बता रही है?
10. दयानिधि से क्या तात्पर्य है?

निबंधात्मक –

11. 'प्रभो' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए?
12. 'प्रभो' कविता की भाषा की विशेषताएँ बताइए?
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:–
    (क) विशाल मंदिर की यामिनी में.........................पता अनूठा बता रही हैं।
    (ख) प्रभो! प्रेममय प्रकाश तुम हो........................... असीम उपवन के तुम हो माली।